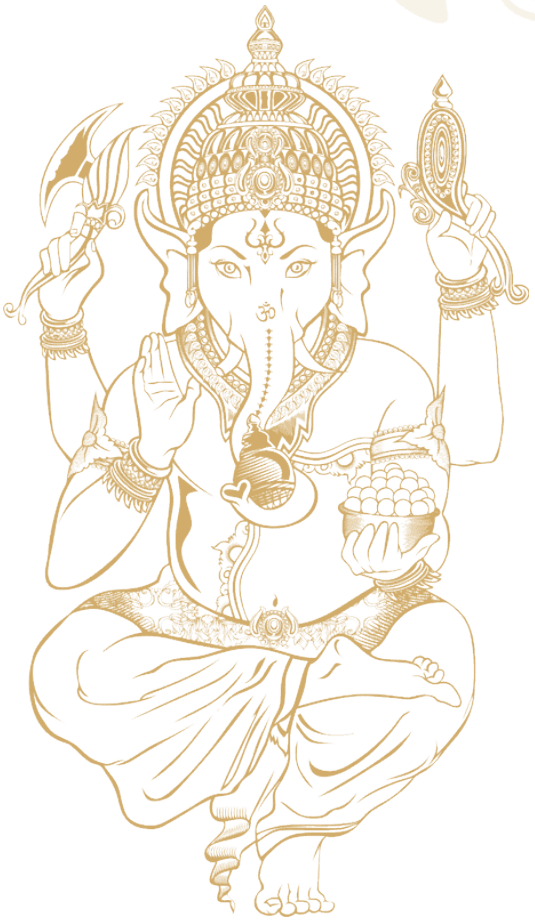

Mayank Chahat

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121678301

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121678301 Date: 21/03/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
14/12/1992	जन्म तिथि	11-12/04/1994
सोमवार	दिन	सोम-मंगलवार
घंटे 22:31:00	जन्म समय	01:07:00 घंटे
घटी 40:20:17	जन्म समय(घटी)	47:49:33 घटी
India	देश	India
Chennai	स्थान	Udaipur
13:05:00 उत्तर	अक्षांश	24:36:00 उत्तर
80:18:00 पूर्व	रेखांश	73:47:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:08:48	स्थानिक संस्कार	-00:34:52 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:22:53	सूर्योदय	06:17:30
17:43:55	सूर्यास्त	18:54:57
23:45:48	चित्रपक्षीय अयनांश	23:46:51

सिंह	लग्न	धनु
सूर्य	लग्न लग्नाधिपति	गुरु
सिंह	राशि	मेष
सूर्य	राशि-स्वामी	मंगल
मघा	नक्षत्र	अश्विनी
केतु	नक्षत्र स्वामी	केतु
1	चरण	2
विष्कुम्भ	योग	विष्कुम्भ
गर	करण	बव
मा-माणिक	जन्म नामाक्षर	चे-चेतना
धनु	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मेष
क्षत्रिय	वर्ण	क्षत्रिय
वनचर	वश्य	चतुष्पाद
मूषक	योनि	अश्व
राक्षस	गण	देव
अन्त्य	नाड़ी	आद्य
मूषक	वर्ग	सिंह

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
केतु 6वर्ष 2मा 15दि		06:01:26	सिंह	लग्न	धनु	21:46:08	केतु 3वर्ष 6मा 8दि	
चन्द्र		29:12:29	वृश्चि	सूर्य	मीन	27:54:00	चन्द्र	
01/03/2025		01:30:29	सिंह	चंद्र	मेष	06:37:28	20/10/2023	
01/03/2035		02:08:13	कर्क व	मंगल	मीन	03:56:11	19/10/2033	
चन्द्र	30/12/2025	09:07:42	वृश्चि	बुध	मीन	09:48:36	चन्द्र	19/08/2024
मंगल	31/07/2026	17:52:55	कन्या	गुरु व	तुला	18:16:35	मंगल	20/03/2025
राहु	30/01/2028	13:12:11	मक	शुक्र	मेष	18:32:28	राहु	19/09/2026
गुरु	31/05/2029	20:53:59	मक	शनि	कुंभ	14:40:10	गुरु	19/01/2028
शनि	30/12/2030	27:44:19	वृश्चि	राहु व	वृश्चि	00:12:34	शनि	19/08/2029
बुध	31/05/2032	27:44:19	वृष	केतु व	वृष	00:12:34	बुध	19/01/2031
केतु	30/12/2032	22:54:27	धनु	हर्ष	मक	02:24:37	केतु	20/08/2031
शुक्र	30/08/2034	23:57:35	धनु	नेप	धनु	29:31:05	शुक्र	19/04/2033
सूर्य	01/03/2035	00:15:41	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	03:49:43	सूर्य	19/10/2033

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:45:48 चित्रपक्षीय अयनांश 23:46:51

लग्न-चलित

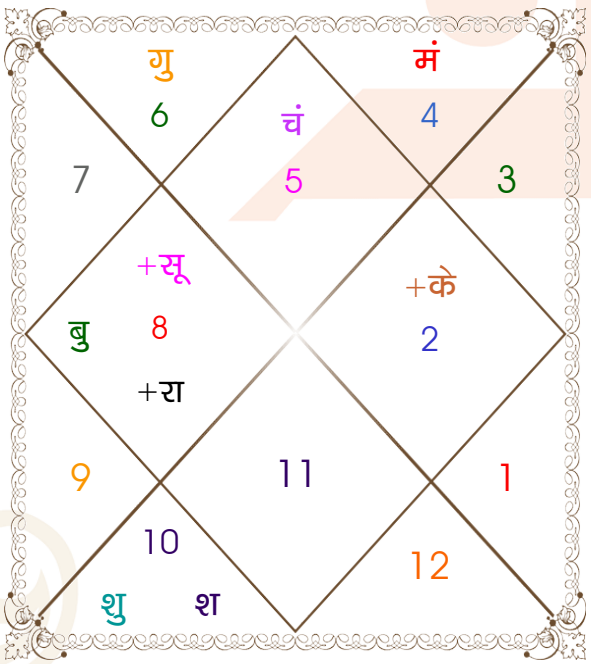

लग्न-चलित

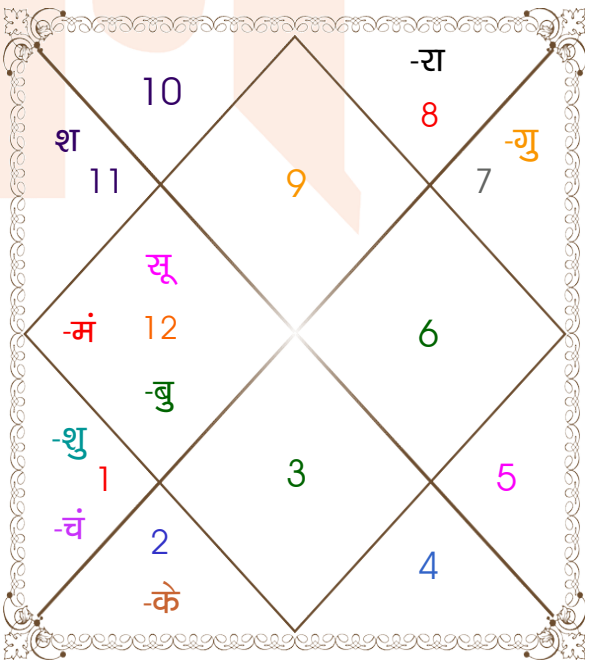

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	वनचर	चतुष्पाद	2	0.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	मूषक	अश्व	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	सूर्य	मंगल	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	देव	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	सिंह	मेष	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	20.00		

कुल : **20 / 36**

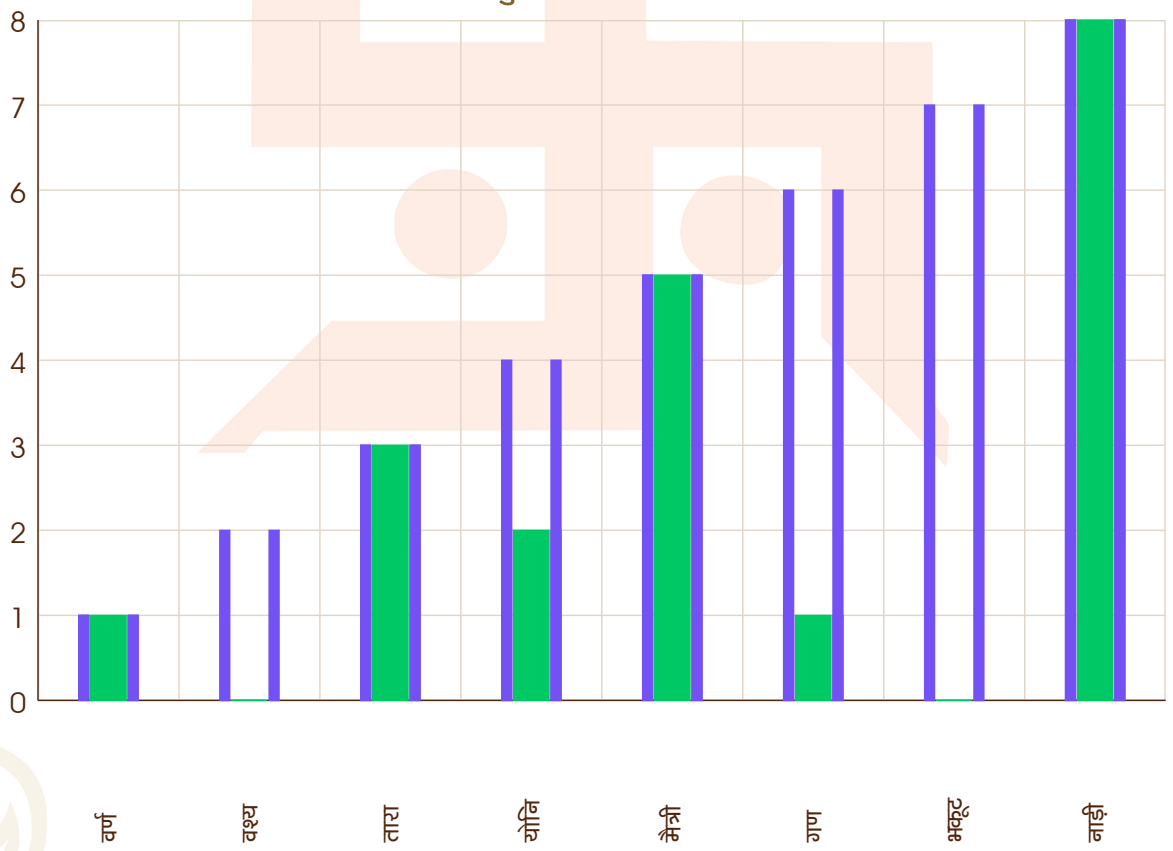

अष्टकूट मिलान

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

डंलंदा का वर्ग मूषक है तथा बींज का वर्ग सिंह है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डंलंदा और बींज का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

डंलंदा मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

यदि वर या कन्या की कुंडली में द्वादश भाव में धनु, मेष तथा कर्क राशि का मंगल स्थित हो तब मंगली दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल डंलंदा कि कुण्डली में द्वादश भाव में कर्क राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

ढप्ए;डडत्मजतवह;0द्धझ0द्धझ क्योंकि मंगल डंलंदा कि कुण्डली में वक्री है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

बींज मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु बींज कि कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि बींज कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु डंलंदा कि कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि डंलंदा कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डंलंदा तथा बींज में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

डंलंदा का वर्ण क्षत्रिय तथा बींज का वर्ण भी क्षत्रिय है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों ही दम्पत्ति अति ऊर्जावान, साहसी, उद्यमी होंगे साथ ही दोनों एक-दूसरे के साथ सद्भाव एवं प्रेम से जीवन बितायेंगे। इसके अतिरिक्त समय-समय पर एक-दूसरे की सहायता से सुखी एवं समृद्ध परिवार का निर्माण करने में योगदान देते रहेंगे।

वश्य

डंलंदा का वश्य वनचर है एवं बींज का वश्य चतुष्पद है। जिसके कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। वनचर हमेशा चतुष्पद के लिए खतरा होता है। जब भी वनचर को मौका मिलता है वह चतुष्पद को अपना शिकार बना लेता है। वनचर डंलंदा एवं चतुष्पद बींज का विवाह अच्छा साबित होने में संदेह है। डंलंदा निर्दयी, क्रूर, वर्चस्वशाली एवं चतुर होगा तथा अपनी पत्नी को नौकरानी की भांति समझेगा। वह बींज को नीचा दिखाने का कोई अवसर नहीं चूकेगा। अक्सर वह अपनी पत्नी के साथ क्रूर व्यवहार कर सकता है तथा संभव है बींज को अक्सर उसका दुर्व्यवहार सहना पड़े।

तारा

डंलंदा की तारा जन्म तथा बींज की तारा भी जन्म है। अतः समान तारा होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों में अगाध प्रेम, सहयोग आपसी विश्वास तथा समझदारी की भावना बनी रहेगी। साथ ही दोनों एक-दूसरे के विश्वास पात्र बने रहेंगे तथा पूर्ण सक्षमता से मिलकर पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करते रहेंगे। इनकी संतान बुद्धिमान, कर्त्तव्यपरायण तथा सफल होगी।

योनि

डंलंदा की योनि मूषक है तथा बींज की योनि अश्व है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात सम संबंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण दोनों के बीच आपसी समझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में सहयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह सकता है। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी बनी रहेगी। दोनों एक दूसरे को संदेह की भावना से देखेंगे जिससे दोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। दोनों के बीच आपसी समझ की कमी भी रहेगी अतः दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। संभव है कि दोनों के बीच अवैध संबंध को लेकर संदेह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो सकता है। बात-बात में दोनों के बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो सकता है। वर या कन्या में से कोई भी विश्वासघात भी कर सकता है। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो सकता है। इनको अपने जीवन में अत्याधिक संघर्ष के उपरांत ही सफलता प्राप्त होगी अतः कठिन

परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजूद इनको अपने जीवन में सफलता कम ही मिलेगी। अर्थात मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की संभावना है। जिसके कारण दोनों को समय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात धनागम के स्रोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। दोनों के बीच रोमांस एवं सेक्स में रुचि की कमी भी रह सकती है। कई बार वाद-विवाद में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण समय-समय पर धन हानि भी हो सकती है। आपस में प्रेम एवं सौहार्द्र की भी कमी रहेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न सामान्य स्तर का ही होगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में डंलंदा एवं बींज दोनों के राशि स्वामी परस्पर मित्र हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि डंलंदा एवं बींज के राशिस्वामी परस्पर मित्र होने के कारण इसे अति उत्तम मिलान माना जाता है। जिसके कारण डंलंदा एवं बींज जीवन की हर खुशी एवं सुख प्राप्त करने में सफल होंगे तथा इनमें परस्पर विश्वास, प्रेम, समझ एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। साथ ही हर प्रकार की सुख-सुविधाओं एवं वैभव से परिपूर्ण होंगे।

गण

डंलंदा का गण राक्षस तथा बींज का गण देव है। अर्थात बींज का गण डंलंदा के गण से श्रेष्ठ है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जिसके कारण डंलंदा निर्दयी, कठोर, निष्ठुर एवं झगड़ालू हो सकते हैं। साथ ही डंलंदा का बींज के साथ क्रूर व्यवहार करने की संभावना बनी रह सकती है। पति-पत्नी, अक्सर कुत्ते-बिल्लियों की भांति झगड़ा कर सकते हैं एवं परिवार में अक्सर अशांति का माहौल बना रहेगा। बींज हमेशा हर कदम पर समझौता करने की कोशिश करती रहेगी ताकि दोनों का संबंध बना रहे।

भकूट

डंलंदा से बींज की राशि नवम भाव में स्थित है तथा बींज से डंलंदा की राशि पंचम भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें नवम-पंचम का वैधव्य दोष लग रहा है। जिसके कारण लड़ाई-झगड़े, मुकदमेबाजी, तलाक एवं अनहोनी घटनाएं घट सकती हैं। डंलंदा की प्रवृत्ति लॉटरी, सट्टेबाजी, जुआ आदि में धन बर्बाद करने की हो सकती है। अपनी इन बुरी आदतों के कारण पति-पत्नी के बीच कोई प्रेम शेष नहीं रह पाता। फिर भी यह विवाह स्वीकार्य है यदि दोनों के राशि स्वामी एक-दूसरे के मित्र हैं।

नाड़ी

डंलंदा की नाड़ी अन्त्य है तथा बींज की नाड़ी आद्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति

उत्तम मिलान है। यह समन्वय शरीर के दो महत्वपूर्ण अवयवों वात एवं कफ को संतुलित करता है। डंलंदा की अन्त्य नाड़ी तथा बींज की आद्य नाड़ी होने के कारण उत्तम स्वास्थ्य, सम्पत्ति, सत्ता, शक्ति एवं दम्पत्ति के पारस्परिक प्रेम एवं सहयोग समय-समय पर मिलता रहेगा। आपकी संतान अति भाग्यशाली, आज्ञाकारी एवं शक्ति संपन्न होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

डंलंदा की जन्म राशि अग्नितत्व युक्त सिंह तथा बींज की भी अग्नितत्व युक्त मेष राशि है। अग्नितत्व में समानता होने के कारण डंलंदा और बींज की परस्पर स्वाभाविक समानता रहेगी तथा वैवाहिक जीवन शांति पूर्वक व्यतीत होगा। अतः यह मिलान उत्तम रहेगा।

डंलंदा की जन्म राशि का स्वामी सूर्य तथा बींज की राशि का स्वामी मंगल दोनों परस्पर मित्र राशियों में स्थित हैं। अतः सुखी दाम्पत्य जीवन व्यतीत करने के लिए यह स्थिति सुखद रहेगी। इसके प्रभाव से डंलंदा और बींज एक दूसरे के गुणों से आकर्षित रहेंगे तथा कमियों की उपेक्षा करेंगे। साथ ही एक दूसरे के प्रति सम्मान जनक समर्पण की भावना रहेगी तथा एक दूसरे के आस्तित्व को पूर्ण स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त डंलंदा और बींज एक दूसरे का पूर्ण ध्यान रखेंगे जिससे परस्पर गहन मित्रता का भाव बना रहेगा।

डंलंदा और बींज की राशियां परस्पर नवम एवं पंचम भाव में पड़ती है। इसके प्रभाव से दोनों के मन में यदा कदा एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या की भावना उत्पन्न होगी तथा अभिमान के भाव में भी प्रबलता आएगी फलतः परस्पर वैमनस्य के भाव की उत्पति होगी। इससे दाम्पत्य जीवन में अशांति तथा असुविधा का डंलंदा और बींज को सामना करना पड़ेगा। यदि डंलंदा और बींज उपरोक्त भावनाओं का यत्न पूर्वक परित्याग कर सकें तो उनके जीवन में खुशी तथा शांति बनी रह सकती है।

डंलंदा का वश्य वनचर तथा बींज का वश्य चतुष्पद है। नैसर्गिक रूप से वनचर एवं चतुष्पद में असमानता का भाव होता है अतः डंलंदा और बींज की अभिरूचियां अलग अलग होंगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर भी विषमता का भाव रहेगा तथा एक दूसरे को काम चेष्टाओं में भी प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में असमर्थ रहेंगे।

डंलंदा और बींज दोनों का वर्ण क्षत्रिय है। अतः दोनों की कार्य क्षमता बराबर रहेगी तथा पराक्रमी एवं साहसी कार्यो को करने के लिए तत्पर रहेंगे जिससे कार्य क्षेत्र में सुदृढ़ता रहेगी।

धन

डंलंदा और बींज दोनों जनम तारा में उत्पन्न हुए है। अतः इसके शुभ प्रभाव से इनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने- में समर्थ रहेंगे। साथ ही सम भकूट होने के कारण आर्थिक स्थिति पर इसका कोई शुभ या अशुभ प्रभाव नहीं होगा परन्तु डंलंदा के लिए मंगल अशुभ होने के कारण किंचित असुविधा वे आर्थिक क्षेत्र में आलस्य के कारण प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु उचित मात्रा में लाभ होने के कारण इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक वे अपना समय व्यतीत करेंगे।

डंलंदा और बींज दोनों को पैतृक सम्पति की प्राप्ति होने की प्रबल संभावना होगी

जिससे आर्थिक सम्पन्नता भी रहेगी एवं धनऐश्वर्य तथा वैभव से युक्त होंगे। यदा कदा डंलंदा की प्रवृति अनावश्यक व्यय करने की होगी लेकिन उससे उनकी धनसम्पन्नता पर कोई प्रभाव नहीं होगा।

स्वास्थ्य

डंलंदा अन्त्य तथा बींज आद्य नाड़ी में उत्पन्न हुए हैं। अतः विभिन्न नाड़ियों में उत्पन्न होने के कारण नाड़ी दोष से ये मुक्त रहेंगे जिससे गंभीर शारीरिक समस्या उत्पन्न नहीं होगी परन्तु मंगल का डंलंदा और बींज दोनों के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव रहेगा। इसके प्रभाव से बींज गुप्त या धातु संबंधी रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगी। साथ ही डंलंदा को हृदय रोग संबंधी परेशानियां होगी एवं संभोग शक्ति में शिथिलता की अनुभूति करेंगे जिससे दाम्पत्य सुख में न्यूनता की अनुभूति होगी। अतः इन दुष्प्रभावों में कमी करने के लिए डंलंदा और बींज दोनों को नियमित रूप से हनुमानजी की उपासना तथा मंगलवार के उपवास करने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से डंलंदा और बींज का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त डंलंदा और बींज के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में बींज के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन बींज को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में बींज को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से डंलंदा और बींज सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार डंलंदा और बींज का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

बींज के अपनी सास के साथ संबधों में मधुरता रहेगी तथा इनके मध्य परस्पर सामंजस्य भी रहेगा। साथ ही सास से बींज को कभी भी कोई परेशानी या समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। बींज भी उनकी सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा सेवा करने में सर्वदा तत्पर रहेंगी।

ससुर पक्ष से बींज को यदा कदा अनावश्यक समस्याओं तथा परेशानियों का

सामना करना पड़ेगा एवं वे सन्तुष्ट तथा प्रसन्न अल्प मात्रा में ही रहेंगे। तथापि उनका हृदय जीतने के लिए बींज उनकी सेवा तथा सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं परस्पर सामंजस्य स्थापित करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। साथ ही देवर एवं ननदों से भी बींज के मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर स्नेह एवं सहयोग के भाव की भी न्यूनता रहेगी। इसके अतिरिक्त परस्पर प्रतिद्वन्दिता तथा आलोचना का भाव रहेगा।

सामान्य रूप से सास ससुर का बींज के प्रति अनुकूल दृष्टिकोण रहेगा तथा परिवार में उसकी महता को स्वीकार करेंगे।

ससुराल-श्री

डंलंदा के अपनी सास से सामान्य संबध रहेंगे। वह अपनी ओर से उन्हें पूर्ण आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा के प्रति भी तत्पर रहेंगे। इनके मध्य कोई विशेष मतभेद नहीं रहेंगे तथा डंलंदा अवसरानुकूल सपत्नीक से मिलने जाया करेंगे जिससे संबधों में मधुरता के भाव की वृद्धि होगी।

ससुर के प्रति भी डंलंदा का आदर तथा सेवा का भाव रहेगा तथा वे भी इनको पूर्ण स्नेह तथा सहानुभूति प्रदान करेंगे साथ ही ससुर भी समय समय पर महत्वपूर्ण मामलों में डंलंदा का दिग्दर्शन करेंगे। लेकिन साले एवं सालियों के साथ संबध अच्छे नहीं रहेंगे तथा परस्पर मतभेद एवं तनाव की बहुलता रहेगी। साथ ही एक दूसरे के प्रति प्रतिद्वन्दिता तथा ईर्ष्या का भी भाव रहेगा। लेकिन यदि डंलंदा तथा वे आपस में सामंजस्य रखें तो संबधों में अनुकूलता आ सकती है। इस प्रकार ससुराल में डंलंदा के संबध सामान्यतया अच्छे ही रहेंगे।